ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-6* July - 2017
Innovation The Research Concept

'झरना' में संवेदनात्मक अभिव्यक्ति : एक विश्लेषण

अरविन्द्र कौर
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
ए.एस.कालेज,
खन्ना, पंजाब

सारांश

'झरना' काव्य में छायावादी काव्य के अनुरूप ही प्रतीक योजना, ध्वनयर्थ व्यंजन और लाक्षणिक प्रयोगों की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई देती है। छायावादी काव्य में जिन संवेदनाओं – प्रेम सौंदर्य विरह, रस आदि का समावेश प्राप्त होता है, उसका चित्रण 'झरना' में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'झरना' की प्रेरणा और विषय का मुख्य आधार प्रेम ही माना गया है। प्रेम और सौन्दर्य की भावना की अतृप्त भावनाएं अपने पूर्ण वेग में प्रवाहित होतीं हैं। भावनाओं को स्वच्छन्द रूप में प्रकट करना छायावाद का प्रमुख पक्ष रहा है, जो 'झरना' में बड़ा ही उपयुक्त रूप में प्राप्त होता है । प्रसाद जी ने सौन्दर्य की भावना का यथावत् वर्णन और प्रेम की भावना की तीव्रता और संगीतात्मकता की झलक, छायावादी काव्य के अनरूप प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है । प्रसाद जी सौन्दर्य और प्रेम के कवि हैं। उनके 'झरना' काव्य में सौन्दर्य और प्रेम का उदात्त चित्रण किया गया है। सौन्दर्य की भिन्न–भिन्न भंगिमाओं और प्रेम के मार्मिक चित्र प्रस्तुत करने में वे हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे ।

मुख्य शब्द : विशिष्ट स्वच्छन्द उच्छवास सौन्दर्याभिव्यक्ति विह्वलता।

प्रस्तावना

'झरना' काव्य संग्रह में छायावादी काव्य की प्रवृत्तियों का समावेश इतनी सफलता के साथ हुआ है कि हम सहज ही 'झरना' की गिनती छायावाद की श्रेष्ठ रचनाओं में कर सकते हैं ।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रसाद जी की हमारे साहित्य को बहुत बड़ी देन है, उनकी प्रतिभा से हमारा साहित्य धन्य एवं पवित्र हुआ है। उनकी रचनाओं ने काव्य को नई दिशा प्रदान की है। उनके समूचे पद्य एवं गद्य रचनाओं में मौलिकता का आभास होता है। इनकी रचनाओं में मनुष्य अपने जीवन के उतार–चढ़ाव, सामाजिक परिवेश, विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं और जीवन के विभिन्न अंगों के चित्र सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। इनमें हम अपने अतीत, अपने गौरव को देखते हैं।

'झरना' काव्य में छायावादी काव्य के अनुरूप ही प्रतीक योजना ध्वनयर्थ व्यंजन और लाक्षणिक प्रयोगों की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई देती है। छायावादी काव्य में जिन संवेदनाओं – प्रेम सौंदर्य विरह, रस आदि का समावेश प्राप्त होता है, उसका चित्रण 'झरना' में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'झरना' की प्रेरणा और विषय का मुख्य आधार प्रेम ही माना गया है। प्रेम और सौन्दर्य की भावना की अतृप्त भावनाएं अपने पूर्ण वेग में प्रवाहित होतीं हैं। भावनाओं को स्वच्छन्द रूप में प्रकट करना छायावाद का प्रमुख पक्ष रहा है, जो 'झरना' में बड़ा ही उपयुक्त रूप में प्राप्त होता है। प्रसाद जी ने सौन्दर्य की भावना का यथावत् वर्णन और प्रेम की भावना की तीव्रता और संगीतात्मकता की झलक, छायावादी काव्य के अनरूप प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

प्रसाद जी सौन्दर्य और प्रेम के कवि हैं। उनके 'झरना' काव्य में सौन्दर्य और प्रेम का उदात्त चित्रण किया गया है। सौन्दर्य की भिन्न–भिन्न भंगिमाओं और प्रेम के मार्मिक चित्र प्रस्तुत करने में वे हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे । सौन्दर्य उनके काव्य का प्रधान आकर्षण रहा है। यौवन के सौन्दर्य का चित्रण कुछ इस प्रकार से किया गया है :–

''मनोवृत्तियाँ खग–कुल–सी–थीं सो रहीं,
अन्तःकरण नवीन मनोहर नीड़ में।''[1]

प्रसाद जी की सौन्दर्य चेतना विविध रूपों में अभिव्यक्त हुई है। मुख्यतः प्रसाद जी का सौन्दर्य चित्रण प्रकृति और नारी है जिसके साक्षात् रूप से दर्शन हमें 'झरना' काव्य में उपलब्ध होते हैं :–

''शरद का सुन्दर नीलाकाश, निशा निखरी, था विमल हास।
बह रही छाया पथ में स्वच्छ, सुधा सरिता लेती उच्छवास ।।

पुलक कर लगी देखने धरा,
प्रकृति भी सकी न आँखें मूँद ।
सुशीतलकारी शशि आया,
सुधा की मानों बड़ी सी बूंद ।।''[2]

छायावादी कवियों का नारी के रूप सौन्दर्य के प्रति आकर्षण को देखकर रीतिकाल के रसिक कवियों का स्मरण हो आना स्वाभाविक है। परन्तु छायावादी कवियों का नारी के रूप लावण्य के प्रति यह आकर्षण स्थूल न होकर सूक्ष्म है और उसका वर्णन भी इसी दृष्टि से छायावादी काव्य में हुआ है। नारी सौन्दर्य को 'झरना' में प्रसाद जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है :–

''रूप जलधि में लोल लहरियाँ उठ रहीं ।
मुक्तागण हैं लिपटे को मल कम्बू में ।
चंचल चितवन चमकीली है कर रही–
सृष्टि मात्र को, मानो पूरी स्वच्छता–
चीनांशुक बन कर लिपटी है अंग में ।''[3]

डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रसाद जी की सौन्दर्याभिव्यक्ति के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं – ''प्रसाद के समान सौन्दर्य के प्रेमी कवि बहुत विरले हैं और पार्थिव सौन्दर्य महिमा से मण्डित करके प्रकट करने का सामर्थ्य तो इतना और किसी में है ही नहीं ।''[4]

प्रसाद जी के काव्य में इसके साथ ही मानव सौन्दर्य और भाव सौन्दर्य के अनूठे भव्य और प्रभावशाली चित्र उपलब्ध होते हैं । प्रकृति का अनन्त सौन्दर्य प्रसाद की भावनाओं और मदिर लालसाओं का प्रतीक बन कर उभरा है । 'झरना' काव्य के सौन्दर्य का रहस्य तो यही है कि वह संतप्त जीवन को शीतल कर देता है जब हृदय से प्रेम का झरना फूटता है तो तापमय जीवन को भी शीतल बना देता है :–

''प्रेम की पवित्र परछाई में ।
लालसा हरित विपटि झाईं में ।।
वह चला झरना,
तापमय जीवन शीतल करना ।
सत्य यह तेरी सुधराई में ।
प्रेम की पवित्र परछाई में ।''[5]

'झरना' काव्य में जहाँ सौन्दर्य के यथावत् चित्रण प्राप्त होते हैं वहीं प्रेम के दोनों पक्ष – वियोग और संयोग का चित्रण भी पूर्ण प्राप्त होते हैं वहीं प्रेम के दोनों पक्ष–वियोग और संयोग का चित्रण भी पूर्ण रूप से झलकता है। प्रसाद जी ने प्रियतम के प्रति सच्चे प्रेम को ही आदर्श प्रेम के रूप में स्वीकार किया है। वासना की गर्त से ऊपर उठ कर प्रसाद जी ने सात्विक प्रेम को ही उच्च माना और उसे 'झरना' में संकलित गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। प्रसाद जी मूलतः प्रेम, आनन्द और सौन्दर्य के कवि के रूप में स्वीकृत हुए हैं। उन्होंने प्रेम वर्णन में अपूर्व उन्माद, लालसा, कम्पन, आत्म विस्मृत करुणा, वेदना, आह्लाद, विह्वलता आदि का अक्षय भंडार है। उनका प्रेम पार्थिव होते हुए भी सूक्ष्म है। 'झरना' प्रसाद जी की यौवन काल की रचनाा है । 'झरना' वास्तव में यौवन का ही प्रतीक माना गया है। यौवनावस्था का प्रेम बड़ा ही उदात्त एवं गम्भीर होता है, इसमें व्यक्ति अपने हृदय का दान करने को विकल रहता है। नव यौवन की प्रेम कल्पना के लिए कवि हृदय का दान करने को ललक रहा है। प्रसाद जी ने प्रेम का ही जय गान अपने काव्य संग्रह 'झरना' में प्रस्तुत किया है और वे चाहते हैं कि विश्व में सर्वत्र प्रेम की पताका फहरती रहे–

''शुद्ध सुवर्ण हृदय है प्रियतम !
तुमको शंका केवल है ।''[6]

प्रेम के मार्ग पर चलते हुए कवि का मन मतवाला हो जाता है। प्रेम मार्ग पर चलते–चलते वह नीरवता में असीम सत्ता की प्रार्थना करता हुआ दिखाई देता है। कामनाओं के नूपुर झंकृत हो उठे हैं और मिलन की उददाम लालसा गीतों में मुखरित हो उठी है जिसकी झलक 'झरना' की कृति 'अव्यवस्थित' में स्पष्ट प्राप्त होती है–

''जब करता हूँ कभी प्रार्थना, कर संकलित विचार,
तभी कामना के नूपुर की, हो जाती झंकार;
चमत्कृत होता हूँ मन में, विश्व के नीरव निर्जन में ।''[7]

प्रसाद जी की दृष्टि में प्रेम एक उत्तम वस्तु है। इसलिए वह प्रिय को प्रेम के मार्ग पर चलने के लिए बार–बार आग्रह करते दिखाई देते हैं। प्रसाद जी भावी प्रेमिका को प्रेम–पथ पर निर्भय भाव से बढ़ने का 'झरना' की सुप्रसिद्ध कृति 'अतिथि' में आग्रह करते हुए लिखते हैं–

''हृदय गुफा थी शून्य, रहा घर सूना ।
इसे बसाऊँ शीघ्र, बढ़ा मन दूना ।।
अतिथि आ गया एक, नहीं पहचाना ।
हुए नहीं पद–शब्द, न मैंने जाना ।।
हुआ बढ़ा आनन्द, बसा घर मेरा ।
मन को मिला विनोद, कर लिया घेरा ।।
उसको कहते 'प्रेम' अरे अब जाना ।
लगे कठिन नख–रेख, तभी पहचाना ।।
अतिथि रहा वह किन्तु, न घर बाहर था ।
लगा खेलने खेल, अरे, नाहर था ।।''[8]

प्रसाद जी ने अपने और अपने प्रियतमा के बीच सुप्रभात को देखने के लिए अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। प्रेमिका मिलन पर प्रेम का हृदय प्रेम भाव से अभिभूत होकर विकल–सा हो जाता है। प्रियतमा का सान्निध्य पा कर वह धन्य हो जाता है और उसे अपनी आकांक्षा की तृप्ति उसके चरणों में लिपट कर ही प्राप्त होती है :–

''पैरों ही से लिपटा–लिपटा कर लूँगा निज पद निर्धार ।
अब तो छोड़ नहीं सकता हूँ, पाकर प्राप्य तुम्हारा द्वार ।।
सुप्रभात मेरा भी होवे, इस रजनी का दुःख अपार–
मिट जावे जो तुमको देखूँ खोलो, प्रियतम !
खोलो द्वार ।।''[9]

प्रेमी का यह निस्वार्थ प्रेम और आत्मसमर्पण उसके प्रणय का आधार है। प्रेमी अपने प्रियतम के वियोग से निराश हो जाता है ं निराश जीवन की आन्तरिक पीड़ा 'झरना' के रूप में छटपताती उछलती–कूदती चल पड़ती है –

''किसी हृदय का यह विषाद है,
छोड़ो मत यह सुख का कण है,
उत्तेजित कर मत दौड़ाओ,
करुणा का विश्रान्त चरण है।।''[10]

प्रसाद जी ने अपने काव्य 'झरना' में प्रियतम के लौट आने का आग्रह भी प्रस्तुत किया है, वह उन बीते क्षणों को लौट आने के लिए कहते हैं, जिसमें उसने अपने प्रियतम के साक्षात् दर्शन किए थे किन्तु उसका प्रियतम उसकी आँखों से ओझल हो गया है। परन्तु अभी भी उसे यह आशा है कि उसका प्रियतम उसे अवश्य मिलेगा। वह इसी अभिलाषा के साथ जीता है कि उसका प्रियतम किसी बहाने उसे याद तो करता ही होगा। इसी प्रकार के आग्रह को 'झरना' में इस प्रकार व्यक्त किया गया है–

''क्रोध से, विषाद से, दया या पूर्व प्रीति ही से,
किसी भी बहाने से तो, याद किया कीजिए ।''[11]

'झरना' में संकलित 'प्रियतम' कृति के माध्यम से प्रसाद जी ने वह भाव व्यक्त किए हैं, जिनमें प्रेमी अपने प्रियतम को अपने मन की भावनाओं से अवगत कराता है–

''कुछ भी मत दो, अपना ही जो मुझे बना लो, यही करो।
रक्खा जब तक आँखों में, फिर और ढार पर नहीं ढरौ ।
कोर बरौनी का न लगे हाँ, इस कोमल मन को मेरे ।
पुतली बन कर रहें चमकते, प्रियतम !
हम दृग में तेरे ।।''[12]

प्रेमी यह भली–भाँति जानता है कि उसका प्रियतम उससे नहीं बल्कि किसी और से प्रेम करता है किन्तु फिर भी उसे उसका दुःख नहीं होता, वह अपने ही एक तरफा प्रेम की व्यंजना करता हुआ कहता है –

''औरों के प्रति प्रेम तुम्हारा, इसका मुझको दुःख नहीं ।
जिसके तुम हो एक सहारा, वही न भूला जाए कहीं ।।''[13]

'झरना' की प्रेम कविताओं में निराशा अधिक है। प्रिय की स्मृति में भी सुख का आभास नहीं होता। मिलन का स्वप्न देखते–देखते प्रेमी के मन में विषाद भर गया है। 'विषाद' में प्रेमी के हृदय की इसी स्थिति को अनेक स्थान पर चित्रांकित किया गया है –

''शिथिल पड़ी प्रत्यंचा किसकी,
धनुष भग्न सब छिन जाल है,
वंशी नीरव पड़ी धूल में,
वीणा का भी बुरा हाल है ।''[14]

प्रेमी अपने मन के भावों को छुपाना तो चाहता है परन्तु असफल रहता है । हृदय की वेदना से व्याकुल होकर प्रेमी अपने जीवन का अन्त करने की सोचता है लेकिन मिलन का स्वप्न प्रेमी के इस भाव को शांत कर देता है और वह अपनी प्रियतमा से केवल अपने प्रति करुणा करने का आग्रह करता है –

''शीतल हृदय सदा होता रहे आँसुओं से,
छिपिये उसी में मत बाहर हो भीजिए ।
हो जो अवकाश तुम्हें ध्यान कभी आवे मेरा,
आहो प्राण प्यारे, तो कठारेता न कीजिए ।''[15]

शनैः शनैः प्रसाद जी की प्रेम भावना का विकास होता है। स्वप्न लोक में उसको प्रिय के दर्शन होते हैं। उसका प्रियतम आँखों से दूर होकर भी प्राणों के समीप है क्योंकि वह प्रतिक्षण उसके छाया चित्रों में खोया रहता है–

स्वप्न लोक में आज जागरण के समय,
प्रत्याशा की उत्यण्ठा में पूर्ण था ।
हृदय हमारा, फूल रहा था कुसुम सा,
देर तुम्हारे आने में थी इसीलिए,
कलियों की माला विचरित की थी कि, हाँ,
जब तक तुम आओगे ये खिल जाएँगी ।
यह सब खिलने लगी, न हम को ज्ञात था ।
आँख खोल देखा तो चन्द्रलोक से,
रंजित, बादल नभ में छा गए,
जिस पर पवन सहारे तुम हो आ रहे ।[16]

'झरना' में उत्तरोत्तर प्रेम का उदात्त और उज्ज्वल रूप निखरता गया है। वियोग भी अब सुखमय हो गया है। संयोग के चित्रों की मादक कल्पना भी 'झरना' में स्पष्ट रूप में झलकती है 'झरना' के गीतों में प्रिय तीव्र आकांक्षा आत्म समर्पण की भावना के साथ प्रिय के प्रति विनम्र निवेदन स्पष्टतः व्यक्त हुआ है। प्रेम–परक गीतों में कवि सभी बन्धनों को तोड़कर अनजान प्रियतमा के संयोग के लिए छटपटा उठता है –

'इस हमारे और प्रिय के मिलन से,
स्वर्ग आकर मेदिनी से मिल रहा;
कोकिलों का स्वर विपंची नाद भी;
चन्द्रिका, मलयजपवन, मकरन्द औ
मधुप माधविका कुसुम से कुंज में,
मिल रहे, सब साज मिल कर बज रहे ।
आज इस हृदयाब्धि में, बस क्या कहँ,
तुंग तरल तरंग ऐसी उठ रही–
शीतकर शत्–शत् उदय होने लगे ।'[17]

उपर्युक्त पंक्तियों में मिलनानुभूति के माध्यम से कवि की आत्मा की ज्योति किरणें फूट पड़ी हैं। अतः प्रसाद जी ने 'झरना' काव्य में जहाँ वियोग की अवस्था का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है वहां संयोग की भावाभिव्यक्ति भी उपयुक्त रूप में अंकित की है। 'झरना' वास्तव में एक प्रेम प्रधान काव्य है। प्रेम की प्राप्ति कर पाना मुश्किल और कष्टदायक है। यदि प्रेम की प्राप्ति हो भी जाए तो जहाँ आनन्द की प्राप्ति होती है वहाँ उसका निर्वाह करना भी बड़ा कठिन है। कितनी विघ्न वाधाएं और विरहव्यथा का सामना करना पड़ता है, प्रेमी और प्रेमिका की ऐसी दशा में मन की विचित्र स्थिति का वर्णन 'झरना' की कृति 'पी कहाँ' की निम्न पंक्तियों में बड़ी मार्मिकता से किया गया है –

'डाल पर बोलता है पपीहा–
हो भला प्राणधन तुम कहीं ? – हो !
आ मिलो हो जहाँ ।
पी ! कहाँ ? पी ! कहाँ ?'[18]

प्रसाद जी ने 'झरना' काव्य में जहाँ प्रेम और सौन्दर्य की बात सजीवता पूर्वक की है, वहाँ उनके काव्य में रसों की अनुभूति भी स्पष्ट रूप में झलकती है। 'झरना' काव्य में श्रृंगार, करुण, शांत आदि रसों की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। रसों के माध्यम से ही काव्य में भावों की अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप में चित्रांकित किया गया है। श्रृंगार रस का चित्रण 'पावस प्रभात' तथा 'बालू की बेला' कृतियों में पूर्ण रूप में दृष्टिगोचर होता है –

'अरूण अपांगों से देखा, कुछ हँस पड़ीं;
लगी टहलने प्राची प्राङ्गण में तभी ।।'[19]
प्रश्न करो टेढ़ी चितवन से,
किस–किसको किसने झेला ?'[20]

इसी प्रकार से शांत रस की अभिव्यक्ति अग्र लिखित पंक्तियों में दृष्टव्य है :–

'निर्दय होकर अपने प्रति अपने को तुमको सौंप दिया,
प्रेम नहीं, करुणा करने को क्षण भर तुमने समय दिया ।
अब से भी तो अच्छा है, अब और न मुझे करो बदनाम।
क्रीड़ा तो हो चुकी तुम्हारी, मेरा क्या होता है काम ।।'[21]

'न कांटों की है कुछ परवाह,
सजा रखता हूँ, इन्हें सयत्न ।
कभी तो होगा इनमें फूल,
सफल होगा यह कभी प्रयत्न ।।'[22]

श्रृंगार रस और शांत रस के साथ–साथ 'झरना' में करुण रस की छवि भी दिखाई देती है :–

'तेरा प्रेम कोलाहल प्यारे, अब तो सुख से पीते हैं–
विरह सुधा से बचे हुए हैं, मरने को हम जीते हैं ।।'[23]

'गिरि संकट में जीवन–सोता,
मन मारे चुप बहता था।
कल–कल नाद नहीं था,
उसमें मन की बात न कहता था।।'[24]

निःसंदेह प्रसाद जी ने अपने 'झरना' काव्य में भाव पक्ष एवं संवेदना के सभी पहलुओं से अभिहित करवाया है। उनका यह प्रयास छायावादी काव्य को चरम सीमा तक पहुँचाने में सहायक बना है।

निष्कर्ष

निःसंदेह प्रसाद जी ने अपने 'झरना' काव्य में भाव पक्ष एवं संवेदना के सभी पहलुओं से अभिहित करवाया है। उनका यह प्रयास छायावादी काव्य को चरम सीमा तक पहुँचाने में सहायक बना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–५*
2. *वही, पृष्ठ–६*
3. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–८*
4. *हिन्दी काव्य में छायावाद – श्री दीनानाथ 'शरण', पृष्ठ–२२७*
5. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–2*
6. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–६६*
7. *वही, प्रसाद, पृष्ठ–४*
8. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–६८*
9. *वही, पृष्ठ–७*
10. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–६७*
11. *वही, पृष्ठ–२६*
12. *वही, पृष्ठ–30*
13. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–३०*
14. *वही, पृष्ठ–१६*
15. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–२६*
16. *वही, पृष्ठ–४०*
17. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ ४२*
18. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ ३५*
19. *वही, पृष्ठ १२*
20. *वही, पृष्ठ १८*
21. *'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–३०*
22. *वही, पृष्ठ–१२*
23. *वही, पृष्ठ–३२*
24. *वही, पृष्ठ–२१*